

**परियोजना- मुसकुराहट…**

**बरकत कया है?**

भाषा के अनुसार बरकत का मतलब होता है  “बढ़ना”. यह एक  छुपी हुई और गैर महसूस  नेमत है जो ईश्वर(अल्लाह) जिसपर चाहता है उस पर बरसाता है . इस नेमत को  माल और दौलत, समय, संतान, दुनिया और आखिरत (भविष्य) मृत्यु के बाद के जीवन के रूप में बढ़ाया जा सकता है .

परम बरकत वह है जब ईश्वर आपसे प्रसन्न हो ;इसके फलस्वरुप वह आप को देखता है और आप पर मुस्कुराता है. कल्पना कीजिए यह कितनी बड़ी उन्नति है!! जब आपके कार्य आपके ईश्वर को इतना प्रसन्न करें कि ईश्वर (अल्लाह) आप पर प्रसन्न होकर मुस्कुराए .यह है सबसे बड़ी नेमत जो आप अपने ईश्वर से प्राप्त कर सकते हैं. यह नेमत आपको इस जीवन में, दुनिया में ,और मृत्यु के बाद के जीवन में उन्नति प्रदान कर सकती है.

दुनिया के जीवन में बरकत ईश्वर इस रुप में प्रदान करते हैं कि वह आपको अपना बना लेता है ;अपने नाम को ऊपर उठाने .दूसरों तक अपना संदेश फैलाने ,उनकी देखभाल करने के लिए आपको आपका ईश्वर स्वीकार कर लेता है. अगर ईश्वर ने आपको बरकत दिया तो इसका सबसे बड़ा सबूत यह है कि वह आपको मृत्यु के बाद के जीवन में उन्नति प्रदान करता है. आपको नरक यानी दोज़ख़ की यातना से बचाता है और आपको स्वर्ग यानी जन्नत में उच्च स्थान प्राप्त कराता है.

हमने इस बिंदु पर कुरान और हदीस के कुछ महत्वपूर्ण आयातो और निर्देशों को संकलित किया है. कृपया चंद मिनट इन्हें ध्यान से पढ़ें .आप इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे कि किस प्रकार अल्लाह (ईश्वर ) आप पर अपनी पुरस्कारों को बढ़ा सकता है, खासकर मुबारक महीने रमजान के पहले के चंद महीनों में.

ईश्वर आपके हृदय को खोलें और आपको उन चुने हुए लोगों में से बनाएं जिस पर ईश्वर अपना नेमत बरसाताहै और जिस पर वह मुस्कुराएगा .

***हदीस (पैगंबर मोहम्मद के निर्देश )***

**दया**

* जरीर बिन अब्दुल्लाह( ईश्वर उनसे प्रसन्न हो ) फरमाते हैं कि पैगंबर मोहम्मद ने फरमाया ;-“जो शख्स लोगों पर दया नहीं दिखाता ईश्वर भी उस पर दया नहीं दिखलाएगा.”  [तिरमिजी -पुस्तके हदीस]
* अब्दुल्लाह बिन अम्र( ईश्वर इनसे प्रसन्न हो) ने कहा पैगंबर मोहम्मद फरमाते हैं :-“दयालु पर ‘अर –रहमान’ (ईश्वर का एक नाम जिसका मतलब है रहमत करने वाला )दया करता है . तुम जमीन वालों पर दया करो आसमान वाला ईश्वर तुम पर दया करेगा. गर्भ का नाम भी अरबी में ‘अर –रहमान’ के नाम पर रखा गया है, इसलिए जो कोई भी इसे ,यानी गर्भ के रिश्ते नातों को जोड़ता है ईश्वर उसे अपनी कृपा से जोड़ता है और जो इसे तोड़ता है ईश्वर उस मनुष्य को अपनी रहमत से तोड़ देता है.” [ तिरमिजी]

**रमजान के महीने में उदारता**

* अब्दुल्ला बिन अब्बास फरमाते हैं कि पैगंबर मोहम्मद सबसे उदार व्यक्ति थे और रमजान के महीने में आपकी उदारता और अधिक हो जाती थी. देवदूत हजरत जिब्रील अलैहिस्सलाम रमजान की हर रात उनके सामने कुरान तिलावत फरमाते थे .रमजान के महीने में पैगंबर मोहम्मद की उदारता बारिश के बादलों को बहाने वाली हवाओं से अधिक तेज और खूबसूरत होती थी.” [बुखारी व मुस्लिम]
* जैद बिन खालिद अल जुहानी कहते हैं कि पैगंबर हजरत मोहम्मद फरमाते हैं :-“जो इंसान किसी रोजेदार को रोजा इफ्तार कराता है अल्लाह उसे उस रोजेदार के रोजे के बराबर सवाब प्रदान करता है .इस पर रोजेदार के  पुण्य यानी सवाब में कोई कमी नहीं की जाती.” [ तिरमिजी]

**ईश्वर की राह में खर्च करना और कर्जदारों के कर्ज को माफ करना**

* अबू याह्या बिन  खुरैम बताते हैं कि पैगंबर हजरत मोहम्मद ने फरमाया:-“ जो ईश्वर की राह में खर्च करता है उसका अज़र यानी सवाब 700 गुना अधिक लिखा जाता है.” [ तिरमिजी]
* अबू कतादा ने कहा पैगंबर हजरत मुहम्मद फरमाते हैं :-“जो इंसान यह चाहता है कि ईश्वर उसे मृत्यु के बाद के जीवन के परेशानी से मुक्त करें तो वह या तो अपने कर्जदार को मोहलत दे या फिर उसके कर्ज को माफ कर दे.” [ मुस्लिम]
* हुजैफा (ईश्वर इनसे प्रसन्न रहें ) फरमाते हैं कि हजरत मोहम्मद फरमाते हैं :-“मालदार इंसान को इश्वर कयामत के दिन बुलाएंगे और पूछेंगे ‘तुमने अपने जीवन में क्या कर्म किया’? वह बोलेगा ‘मेरे परवरदिगार आपने मुझे दौलत दिया था मैं लोगों को क़र्ज़ दिया करता था और जो क़र्ज़ अदा करने में असमर्थ होता था मैं उस का कर्ज माफ कर दिया करता था. और मैं मुसीबत में फंसे कर्जदारों को नरम दिली के साथ मौहलत दिया करता था.’ इस पर ईश्वर कहेंगे ‘यह गुण तो हमारे लिए हैं जो तुमने अपनाया. जाओ आज हमने तुम्हें माफ किया मेरे बंदे.” [इस हदीस को अकबर बिन आमिर और अबू मसूद अंसारी ने भी पैगंबर हजरत मोहम्मद से बयान किया है -मुस्लिम]

**हिदायत प्रदान करना**

* अबू मसूद उकबह बिन अम्र अल अंसारी बद्री ने कहा :-“पैगंबर हजरत मोहम्मद फरमाते हैं- ‘जो किसी मनुष्य को नेकी का रास्ता दिखलाता है उसको नेकी करने वाले के बराबर सवाब मिलता है.” [ मुस्लिम]
* अबू हुरैरा ने फरमाया पैगंबर हजरत मोहम्मद ने कहा:-“ जो किसी इंसान को नेकी करने की दावत देता है उसे तमाम नेकी करने वालों के बराबर सवाब मिलता है, और इससे नेकी करने वालों के सवाब में कमी नहीं किया जाता. और जो इंसान किसी को बुराई की दावत देता है उसे तमाम उस बुरा काम करने वालों के बराबर पाप मिलता है और इससे बुरे काम करने वालों के पापों में कोई कमी नहीं की जाती.” [ मुस्लिम]

**मुसलमानों के बीच सौहार्द**

* नोमान बिन बशीर ने बताया पैगंबर हजरत मोहम्मद ने फरमाया:-“ मुसलमान अपनी आपसी मोहब्बत, दया और करुणा में एक जिस्म के भाती हैं जब जिस्म के किसी एक हिस्से में दर्द होता है तो पूरा जिस्म उसकी तकलीफ को महसूस करता है .” [ बुखारी व मुस्लिम]

* इब्ने ओमर (ईश्वर इनसे प्रसन्न हो ) फरमाते हैं पैगंबर हजरत मुहम्मद ने फरमाया :-“मुसलमान आपस में भाई होते हैं .तो उसे चाहिए कि ना तो अपने भाई पर अत्याचार करें और ना ही उसे किसी अत्याचारी के हवाले करें.( जैसे शैतान या नफ़्स या कोई बुराई जिसके प्रति उसका झुकाव हो) जो अपने भाई की किसी जरूरत को पूरा करेगा ईश्वर उसकी जरूरत को पूरा करेंगे जो अपने भाई की किसी तकलीफ को दूर करेगा ईश्वर मृत्यु के बाद के जीवन में उससे उसकी तकलीफ को दूर करेंगे. जो अपने भाई को किसी मुसीबत से बाहर निकालेगा ईश्वर उसे मृत्यु के बाद के जीवन की मुसीबत से बाहर  निकालेंगे. जो अपने किसी भाई के दोष पर पर्दा डालता है ईश्वर मृत्यु के बाद के जीवन में उसके दोष पर पर्दा डालेंगे.” [ बुखारी व मुस्लिम]

**जरुरतमंदों की मदद करना**

* अनस (ईश्वर इन से प्रसन्न हो) फरमाते हैं कि हजरत मोहम्मद फरमाते हैं:-“ तुम में से कोई भी सच्चा मुसलमान तब तक नहीं बन सकता जब तक वह अपने भाई के लिए वह चीज़ ना पसंद करें जो स्वयं अपने लिए पसंद करता है.” [ बुखारी व मुस्लिम]

* अबू हुरैरा फरमाते हैं कि अल्लाह के रसूल हजरत मुहम्मद ने फरमाया :-“जो किसी मुसलमान  की दुनिया में किसी तकलीफ को दूर करता है ईश्वर आखिरत यानी जी उठने के दिन ,उसकी तकलीफ दूर करेंगे .जो अपने भाई के दुख के भार को हल्का करेगा ,ईश्वर उसके भार को आखिरत में हल्का करेंगे .जो किसी मुसलमान के दोष पर पर्दा डालता है ईश्वर इस जीवन में और आखिरत में ऐसे मनुष्य के दोषों पर पर्दा डालेंगे. ईश्वर अपने बंदे की तब तक मदद करते हैं जब तक वह अपने भाई की मदद करता रहता है. जो ज्ञान की तलाश में रास्ता तय करता है अल्लाह जन्नत तक के रास्ते को उसके लिए आसान करते हैं. वह लोग जो ईश्वर के घर में यानी मस्जिदों में जमा होते हैं ,अल्लाह की किताब को पढ़ते हैं ,पढ़ाते हैं उन पर ईश्वर यानी अल्लाह सकीना नाज़िल करता है. ईश्वर की करुणा उनको छुपा लेती है .फरिश्ते उन्हें घेर लेते हैं. ईश्वर ऐसे व्यक्ति का नाम अपने करीबी फरिश्तों की मजलिस में लेते हैं .जो शक्स भलाई के काम करने में पीछे रहेगा, उसका नस्ल और खानदान उसको कुछ काम नहीं आयेगा.” [मुस्लिम]

* मुसबबिन साद बिन अबी वक्कास ने कहा:-“ साद अपने आप को अपने से कमज़ोरो से अच्छा समझते थे .पैगंबर मोहम्मद ने उनसे कहा कि ऐ साद, तुम्हें मदद और प्रावधान तुम में से कमजोरों की वजह से मिलती है.” [ बुखारी शरीफ]

* हदीस की किताबों में है कि इब्ने अब्बास रमजान में इत्तेकाफ़ की नियत से अल्लाह के रसूल की मस्जिद में मौजूद थे .जब एक व्यक्ति जो गमजदा था उनके पास आया. उन्होंने उस व्यक्ति से पूछा कि वह क्यों उदास है? व्यक्ति ने कहा ‘ऐ अल्लाह के रसूल के चचेरे भाई (यानी इब्ने अब्बास) एक व्यक्ति का मुझ पर कुछ हक है और अल्लाह के रसूल की हुरमत की कसम (आपके कब्र मुबारक की तरफ इशारा करते हुए) मैं उस हक को अदा करने में असमर्थ हूं.’ इब्ने अब्बास ने कहा ‘क्या तुम चाहते हो कि मैं उस व्यक्ति के प्रति अपने अच्छे ताल्लुकात का इस्तेमाल करूं ?’ उस शक्स ने कहा’ जी अगर आप चाहे.’ इस पर इब्ने अब्बास ने अपने जूते पहने और मस्जिद से बाहर जाने को तैयार हुए. एक शख्स ने कहा कि इब्ने अब्बास क्या आप नहीं जानते कि इत्तेकाफ़ की हालत में आप मस्जिद से बाहर नहीं जा सकते. इस पर इब्ने अब्बास ने फरमाया ‘नहीं मैं नहीं भूला हूं .लेकिन मैंने अल्लाह के रसूल से (आपके कब्र मुबारक की तरफ इशारा करते हुए .आपकी मृत्यु कुछ दिन पहले ही हुई थी) सुना है कि जो अपने भाई की किसी जरूरत को पूरा करने के इरादे से निकलता है तो, यह कार्य उसके हक़ में 10 वर्षों तक इत्तेकाफ़ करने से बेहतर है. और जो केवल एक दिन इत्तेकाफ़ में केवल अपने ईश्वर को प्रसन्न और उसके दीदार करने की ललक से बैठता है ,तो ईश्वर उसे नरक से तीन खंदक दूर करते हैं और एक  खंदक की चौड़ाई दुनिया और आसमान से भी अधिक है .” [ तबरानी बैहाकी और हकीम]

* अल्लाह के रसूल ने फरमाया जो व्यक्ति किसी बेवा औरत या गरीब की देखभाल करता है ,वह अल्लाह के रास्ते में संघर्ष करने वाले के समान है, या पूरी रात नमाज पढ़ने और पूरे दिन रोजा रखने वाले के समान है.
* एक व्यक्ति अबू दर्दा के पास गया और उनसे कहा मैं एक बूढ़ा व्यक्ति हूं ज्यादा कुछ करने में असमर्थ हूं. मुझे ऐसा उपदेश दीजिए जो छोटा हो लेकिन पुण्य में अधिक हो. अब दर्दा ने फरमाया,’ किसी मुसलमान को प्रसन्न कर दो.’ हैरत के साथ उस बूढ़े व्यक्ति ने कहा,’ मैं तो यह सोच कर आया था कि आप मुझे कुछ इबादत या जिक्र का उपदेश देंगे, परंतु किसी व्यक्ति को प्रसन्न करने से मुझे क्या लाभ होगा?’ इस पर अब दर्दा ने फरमाया, ‘अगर तुम किसी मुस्लिम मर्द या औरत को प्रसन्न कर दोगे तो ईश्वर तुम पर प्रसन्न होकर मुस्कुराएगा और अगर उसकी मुस्कुराहट तुम पर पड़ गई तो वह तुम्हें कभी भी नरक में नहीं डालेगा.’

**दान-पुण्य और उदारता**

* अबू हुरैरा बताते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया :-“दो फ़रिश्ते हर सुबह यह ऐलान करते हैं कि , ‘ऐ अल्लाह ,जो दान पुण्य करता है आप उसे और दें ;और दूसरा फरिश्ता कहता है कि ऐ ,अल्लाह जो दान-पुण्य नहीं करता है आप उसे बर्बाद कर दें.” [ बुखारी व मुस्लिम]
* अबू हुरैरा जिक्र करते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया:-“ अल्लाह फरमाता है आदम की औलाद (यानी इंसान) लोगों पर खर्च करो, अल्लाह भी तुम्हें देगा.” [ बुखारी व मुस्लिम]
* अबू हुरैरा जिक्र करते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया:-“ माल बांटने से कम नहीं होता. अल्लाह माफ करने वालों की इज्जत को बढ़ाता है. अल्लाह के खातिर जो एक दूसरे से नम्रता दिखाता है,अल्लाह उसके दर्ज़े को बुलंद करता है.” [ मुस्लिम]

**बीमारों की मदद करना**

* अबू हुरैरा जिक्र करते हैं कि अल्लाह के रसूल ने फरमाया:-“ यकीनन अल्लाह जी उठने के दिन फरमाएगा, ‘आदम की औलाद! मैं बीमार था लेकिन तूने मेरी खबर ना ली.’ इंसान कहेगा, ‘अल्लाह मैं कैसे आपकी ख़बर ले सकता हूं जब कि आप सारे जहां के रब हैं.’ इस पर अल्लाह कहेंगे, ‘तुझे नहीं मालूम कि फलां व्यक्ति बीमार था. अगर तू उस की खबर लेने जाता तो मुझे उसके पास पता है. आदम की औलाद मैंने तुझसे खाना मांगा परंतु तूने मुझे खाना ना दिया.’ इंसान कहेगा, ‘या अल्लाह! मेरे रब. मैं तुझे कैसे खिला सकता हूं; जबकि तू सारे जहां का रब है?’ अल्लाह कहेंगे , ‘तुझे नहीं मालूम कि फला व्यक्ति भूखा था. अगर तू उसे खाना खिलाता ,तो उसका अज़र मेरे पास पाता.’ इसी तरह अल्लाह पूछेंगे कि मैंने तुझ से पानी मांगा लेकिन तूने मुझे पानी नहीं पिलाया. बंदा बोलेगा कि मैं तुझे कैसे पानी पिला सकता हूं जबकि तू सारे जहां का रब है. अल्लाह कहेंगे कि मेरा फलां बंदा प्यासा पुकार रहा था. अगर तू उसे पानी पिलाता तो उसका सवाब मेरे पास पाता.” [ मुस्लिम]
* अली बिन अबू तालिब (अल्लाह इन से प्रसन्न हो) फरमाते हैं कि उन्होंने अल्लाह के रसूल को फरमाते हुए सुना :-“अगर कोई मुसलमान अपने बीमार भाई से सुबह मुलाकात करता है तो 70000 फरिश्ते शाम तक उसके लिए दुआएं करते हैं. अगर वह शाम में उसकी अयादत यानी मुलाकात करता है तो 70000 फरिश्ते सुबह तक उसके लिए दुआएं करते हैं और वह इसका अज़र जन्नत में देखेगा.” [तिरमिजी]

**अल्लाह के रास्ते में खड़ा रहना**

* हदीस की किताबों में है कि हजरत अबू हुरैरा एक रात मुस्लिम फौज की सुरक्षा के लिए समंदर के करीब तैनात थे. लोगों को कुछ आहट मिली. लोगों ने किनारे जाकर देखा कि सब कुछ ठीक है. लोग वापस आने लगे, परंतु अबू हुरैरा अपने स्थान पर खड़े रहे. एक व्यक्ति उन के समीप आया और बोला कि अबू हुरैरा आप क्यूँ खड़े हैं? अबू हुरैरा ने जवाब दिया कि उन्होंने अल्लाह के रसूल से सुना है कि “जो व्यक्ति अल्लाह के रास्ते में एक घंटा पहरे में खड़ा रहता है, यह कार्य शब ए कदर की रात में हजरे अस्वद के समीप नमाज़ पढ़ने से अधिक बेहतर है.” [हदीस नंबर  1068 सिलसिला हदीस सही]

***पवित्र कुरान के आयात***

* ऐ रसूल! उनका मंजिलें मकसूद तक पहुंचाना तुम्हारा काम नहीं .तुम्हारा काम सिर्फ रास्ता दिखाना है. मगर हां, खुदा जिसको चाहे मंजिलें मकसूद तक पहुंचा दें, और लोगों तुम जो कुछ नेक काम में खर्च करोगे तो अपने लिए और तुम खुदा की खुशनूदी के सिवा और काम में खर्च करते ही नहीं हो. और जो कुछ तुम नेक काम में खर्च करोगे कयामत में तुमको भरपूर वापस मिलेगा और तुम्हारा हक ना मारा जाएगा. [कुरान सूरह बकरा आयत नंबर 272]
* ऐ रसूल तुम कह दो कि मेरा परवरदिगार अपने बंदों में से जिसके लिए चाहता है रोजी कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है तंग कर देता है. और जो कुछ भी तुम उसकी राह में खर्च करते हो वह उसका अजर देगा और वह तो सबसे बेहतर रोजी देने वाला है. [कुरान सूरा नंबर 34 आयत नंबर 39]
* ऐ लोगों जब तक तुम अपनी पसंदीदा चीजों में से कुछ राहे खुदा में खर्च ना करोगे, हरगिज़ नेकी के दर्जे पर फायज नहीं हो सकते. और तुम कोई सी भी चीज खर्च करो, खुदा तो उसको जरुर जानता है. [ कुरान सूरा नंबर 3 आयत नंबर  92 ]
* और तमाम चीजों की का रूजू खुदा ही की तरफ होता है. ऐ ईमान वालों ! रूको करो और सजदे करो और अपने परवरदिगार की इबादत करो और नेकी करो ताकि तुम कामयाब हो जाओ. [ कुरान सूरा नंबर 22 आयत नंबर 77]
* क्या तुमने उस शख्स को भी देखा है जो रोज़े ज़ज़ा को झुठलाता है ? यह तो वही है जो यतीम को धक्के देता है और मोहताजों को खिलाने के लिए लोगों को आमादा नहीं करता. [ कुरान सूरा नंबर 107 आयत 1 -3]

**अब आगे क्या?**

* अगर इन तमाम बातों ने आपके अंदर जोशो-खरोश को जिंदा किया है, तो आपको अपने आप से यह सवाल पूछना चाहिए कि आप क्या कर सकते हैं?

* अगर आप चाहते हैं कि आपको शाबान और रमजान और पूरे साल की बरकतें मिले!
* अगर आप यह चाहते हैं कि आपकी तमाम दुआओं को कुबूल किया जाए!
* अगर आप यह चाहते हैं कि आपकी तमाम गुनाहों पर पर्दा डाल दिया जाए ,उन्हें माफ़ कर दिया जाए ,और उन्हें भुला दिया जाए!
* अगर आप यह चाहते हैं कि आपकी कदमों को और आपके कदमों के नीचे की धूल को 70000 फरिश्ते रोजाना चूमे और आप की हिफाजत करें!

* अगर आप यह चाहते हैं कि आपको मस्जिद-ए-नबवी में 10 साल के इत्तेकाफ़ से ज्यादा सवाब मिले!

* अगर आप यह चाहते हैं कि आप का शुमार उन लोगों में से हो जिन पर अल्लाह ताला मुस्कुराएंगे .उन्हें पाकी और तहारत अता फरमाएंगे. .जहन्नम की आग से बचाएंगे और उन पर हमेशा हमेश के लिए अपनी खुशी का इजहार करेंगे!

* अगर आप उन लोगों में से होना चाहते हैं जो सिर्फ अल्लाह के लिए हैं और वह अपने वक्त और अपनी ताकतों को अल्लाह के लिए,उसके दीन को उठाने के लिए और अल्लाह के दिन की मदद के लिए हैं. और आपको हजरे अस्वद के सामने लैलतुल कद्र में खड़े होकर नमाज पढ़ने से ज्यादा अजर मिले!

* अगर आप खुद अपने आप से मोहब्बत करते हैं आप अपने रब से मोहब्बत करते हैं ;मुसलमानों से और इंसानियत से मोहब्बत करते हैं.और आप अपने लिए और अपने परिवार के लिए एक अज़ीम दौलत को छोड़कर जाना चाहते हैं!

* अगर आप उपरोक्त इन में से किसी भी एक चीज या तमाम चीजों को हासिल करना चाहते हैं?

**तो यह वह काम है जो आपको करने चाहिए**

सबसे पहले अपने नियत को पुख्ता करें अभी करें. अपने माल में से खर्च करें. लोगों से चंदा एकत्रित करेंऔर प्रोजेक्ट और परियोजना मुस्कुराहट को शुरू करें.

**मैं क्या कर सकता हूं?**

बहुत सारे काम है जो आप कर सकते हैं. बस अपनी चारों और देखें, बहुत लोग जरूरतमंद हैं .और  और बहुत लोग आपकी मदद से खुश होंगे, अगर आपके दिमाग में कोई विचार नहीं आ रहे हैं तो कुछ नसीहतें हम आपको देना चाहेंगे.

1. **जरूरतमंद को पहचाने**

बहुत सारे संस्थान जो गरीब गांव में रहने वाले लोगों की मदद करते हैं, आप उनसे संपर्क स्थापित कर सकते हैं.

अगर आप स्वयं ऐसे किसी व्यक्ति को या लोगों के समूह को जानते हैं तो यह और भी अच्छी बात है. ऐसे लोगों से आप स्वयं संपर्क स्थापित कर सकते हैं.

अपने जिला के अस्पताल से आप संपर्क स्थापित कर सकते हैं वहां से आप जरूरतमंदों की एक सूची ले सकते हैं और यह देख सकते हैं कि उनको किस प्रकार की मदद की जरूरत है, मसलन दवाइयां,  बैसाखी, इत्यादि.

आप किसी यतीमखाने से संपर्क स्थापित कर सकते हैं या अगर आप किसी यतीम को स्वयं जानते हैं तो खुद उनकी मदद कर सकते हैं.

अपने इर्द-गिर्द नजर दौड़ाएं और जरुरतमंदों को पहचाने. बहुत सारे साधारण लोग अचानक किसी जरूरत में पढ़ सकते हैं. जैसे बेवा औरतें, तलाकशुदा औरतें ,गुमशुदा लोग, ऐसे लोग जिनकी नौकरियां जा चुकी है, या जो किसी मुसीबत में फंसे हैं.

आप अखबार पढ़ें, समाचार देखे, बहुत सारे ऐसे मुल्क है जहां लोग रिफ्यूजी की जिंदगी जी रहे हैं या प्राकृतिक आपदा से लड़ रहे हैं और उन्हें मदद की सख्त जरूरत है, जैसे सीरिया, फिलिस्तीन, बर्मा, बोस्निया, इंडोनेशिया, चाइना, इत्यादि.

अपने चारों ओर लोगों को देखें आपके घर में काम करने वाली, आपके नौकर-चाकर, आपके मुलाजिम. यह लोग भी ज़रूरत में पड़ सकते हैं. उनकी जरूरतों को पहचाने और इन्हें अल्लाह के खातिर आराम पहुंचाएं .

1. **अपने वादे और अपनी प्रतिज्ञा को मजबूत करें और इन चीजों में से आप कुछ कर सकते हैं, जैसा आपकी सलाहियत हो.**

इस रमजान जरूरतमंदों के लिए इफ्तार का इंतजाम करें

मस्जिद के खर्च में बढ़ चढ़कर हिस्सा लें. झोपड़पट्टियों में पानी का या बिजली के बिल के भुगतान का इंतजाम करें.

ऐसे गरीब इलाकों में लोगों से संपर्क करें और देखें कि आप उनकी किस तरह मदद कर सकते हैं जैसे साफ पानी का इंतजाम करना साफ हवा का इंतजाम करना लोगों की घरों की मरम्मत, शौच का इंतजाम करना. इत्यादि.

आप बीमारों की भी मदद कर सकते हैं उनकी दवाई के खर्च को उठा कर, उनकी जरूरत को पूरा करके, उनकी अयादत करके, और उनकी जरूरत को पूरा करके. अगर बीमार शख्स अपने परिवार का एकलौता कमाने वाला है तो आप उसके परिवार के पालन पोषण के लिए इंतजाम कर सकते हैं.

आप किसी पुस्तक के प्रकाशक से संपर्क कर सकते हैं और विभिन्न भाषाओं में कुरान का तर्जुमा या दुआ हदीस या इस्लामिक अदब के किताबों को इन क्षेत्रों में बांट सकते हैं.

आप विभिन्न दान और चंदा को एक जगह एकत्रित करके, जैसे रुपया पैसा, कपड़ा ,खाना, इन सब चीजों को एक जगह एकत्रित करके आप लोगों में या विभिन्न मुल्कों में बांट सकते हैं. इत्यादि.

**मुस्कुराहट को फैलाएं**

आपको बस एक नेक नियत की जरूरत है जो विश्वास से भरा हो. और इस बात का यकीन हो  कि अगर आप इन तमाम कदमों को उठाते हैं और अगर अल्लाह ने चाहा तो आप तमाम नेमतों को हासिल कर सकते हैं.

मेरे प्यारे भाइयों और बहनों इस्लाम और इंसानियत में, आज हम कर सकते हैं कल शायद हमें मौका ना मिले; आज हम जिंदा हैं कल शायद हम मर जाएं ; यह एक महत्वपूर्ण पुकार है जो मेरे लिए है और आपके लिए है ,ताकि हम इस दुनिया में और इस दुनिया के बाद आने वाली दुनिया में बेहतरीन नेमत हासिल कर सके!!

**और सबसे बड़ी नेमत है अल्लाह का हमसे खुश होना और हम पर मुस्कुराना**

वक्त बर्बाद ना करें .बहाने ना बनाएं.ना ही सरकार को दोष दें .अपने अंदर की नेफाक को, आलसपन को और मतभेद को मिटाएं. लोगों की जिंदगी में मुस्कुराहट लाए ताकि अल्लाह हम पर मुस्कुराए....